

Living the Lotus 9

Buddhism in Everyday Life

2024
VOL. 228



**Members in the US, and from Japan, Join the 2024 Nisei Week
Grand Parade in Los Angeles, August 11**



Photos: Richard Kano

**Living the Lotus
Vol. 228 (September 2024)**

Senior Editor: Keiichi Akagawa
Editor: Sachi Mikawa
Copy Editor: Parmita Shekhar

Living the Lotus is published monthly by Rissho Kosei-kai International, Fumon Media Center, 2-7-1 Wada, Suginami-ku, Tokyo 166-8537, Japan.
TEL: +81-3-5341-1124 FAX: +81-3-5341-1224
Email: living.the.lotus.rk-international@kosei-kai.or.jp

रिश्शो कोसेईकाई गृहस्थों की संस्था है जिसका पवित्र ग्रन्थ सद्धर्म पुण्डरीक सूत्र एवं अन्य दो लघु सूत्रों का संकलन है। इस संस्था को संस्थापक निक्क्यो निवानो एवं सह-संस्थापक म्योको नागानुमा ने सन् १९३८ ई० में स्थापित किया था। यह उन साधारण स्त्रियों एवं पुरुषों की संस्था है जिन्हें बुद्ध में श्रद्धाविश्वास है तथा जो बुद्ध के उपदेशों के अनुसार चलते हुए अपने आध्यत्मिक जीवन को समृद्ध बनाते हैं।

प्रेसिडेण्ट का दिशानिर्देश निचिको निवानो, के अन्तर्गत हम देश एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तरों पर अन्य संस्थाओं के साथ मिलकर शान्ति एवं कल्याण के लिये तत्पर होकर परोपकार के कार्य में सलग्य हैं।

“लिविंग द लोटस: बुद्धिज्म इन एवरीडे लाइफ” का उद्देश्य यह दर्शाना है कि जैसे सरोवर के कीचड़ से निकलकर कमल खिलता है वैसे ही पुण्डरीक सूत्र की शिक्षा का दैनिक जीवन में अनुशरण के प्रयास से हमारा जीवन समृद्ध बनता है, हमारा जीना सार्थक होता है। इसका संस्करण के माध्यम से दुनियाँ में लोगों के दैनिक जीवन में बौद्धधर्म की शिक्षा को सरल बोधगम्य बनाना है।

अपने हृदय को विकसित करें, अपने बुद्ध
स्वभाव को उजागर करें

निचिको निवानो,
प्रेसिडेण्ट रिश्शो कोसेइ काइ



शाक्यमुनि का ब्राह्मण से संवाद

1998 में, जिस वर्ष रिश्शो कोसेइ काइ ने अपनी साठवीं वर्षगाँठ मनाई, मैंने याकुशिन (कोसेइ प्रकाशन) पत्रिका में निम्नलिखित लिखा:

जब मैं छोटा था, तो मैं खेतों की जुताई में मदद करता था। जुताई की गई मिट्टी और बिना जुताई की गई मिट्टी में अंतर होता है। जुताई की गई मिट्टी कठोर होती है और कुछ भी स्वीकार नहीं करती, लेकिन अच्छी तरह से जुताई की गई मिट्टी नरम होती है और बहुत सारा पानी और उर्वरक सोख लेती है। इसी तरह, एक अच्छी तरह से विकसित मन लचीला होता है, आसक्ति से मुक्त होता है, और किसी भी चीज़ को ईमानदारी से, वैसे ही आत्मसात कर सकता है, जैसा वह है।

इस प्रकार मैंने हम सभी के लिए “अपने बौद्ध हृदयों को विकसित करने” के महत्व को समझाया, और जैसा कि मैंने पहले भी कई बार कहा है, यह शाक्यमुनि के उपाख्यानों और सुत्त निपात के श्लोकों पर आधारित है।

यहाँ, मैं आपको इसकी विषय-वस्तु से पुनः परिचित कराता हूँ।

एक ब्राह्मण, जो एक बहुत बड़ा जमींदार था, अपने खेतों की जुताई पूरी कर चुका था और खेत के मजदूरों को भोजन बाँटने ही वाला था कि तभी उसने शाक्यमुनि को भिक्षा माँगते हुए आते देखा। ब्राह्मण ने उससे कठोर स्वर में पूछा, “तुम भी खेत जोतते हो, बीज बोते हो और फिर अपने प्रयासों से कुछ भोजन प्राप्त करते हो?” शाक्यमुनि ने शांति से उसे उत्तर दिया, “मैं भी खेत जोतता हूँ और बीज बोता हूँ।” लेकिन ब्राह्मण अभी भी संशय में था, इसलिए शाक्यमुनि ने उससे पद्य में कहा:

मैं जो बीज बोता हूँ वह विश्वास है, और आत्म-अनुशासन वर्षा है।

बुद्धि मेरा हल है, और विनम्रता मेरे हल की छड़ें हैं।

मन लगान है, और चिंतन हल का फाल और फावड़ा है।

शरीर और वाणी में संयम बरतें, अपने आहार में संयम बरतें, और अधिक न खाएं।

सत्य का पालन करना घास के खेत को काटना है।

लचीलापन बैल से जूआ हटाना है।

परिश्रम एक भार वहन करने वाला बैल है जो आपको शांति की स्थिति में ले जाता है।

पीछे हटे बिना आगे बढ़ते हुए, आप भय और चिंता से मुक्त स्थान पर पहुँचेंगे।

इस तरह की साधना, अमरता का पुरस्कार देती है।

इस तरह की साधना आपको हर तरह के दुख से मुक्त करती है।

इस श्लोक की पृष्ठभूमि शाक्यमुनि के जीवनकाल के दौरान भारत जैसे स्थानों में खेती की पद्धति है। जापान में भी हल खेती का प्राथमिक साधन हुआ करता था। खेतों में मिट्टी को ढीला करने के लिए पशुओं को हल खींचने के लिए बनाया जाता था। शाक्यमुनि हल की तुलना कर रहे हैं जो खेतों (हमारे दिल और दिमाग) में मिट्टी को तोड़ता और ढीला करता है, लेकिन बैल या घोड़े की खींचने वाली शक्ति को हल में स्थानांतरित करने और हल (बुद्धि) को पर्याप्त रूप से काम करने के लिए, हल को उन शाफ्ट द्वारा नियंत्रित किया जाना चाहिए जो हल को बैल से जोड़ते हैं। इन श्लोकों के अनुसार, "विनम्रता हल की शाफ्ट है," इसलिए आपकी विनम्रता चिंतन के हल को आपके दिमाग तक पहुँचने देती है, और जब आप खुद पर चिंतन करना भूल जाते हैं, तो आप हल से चिपके हुए मिट्टी के गुच्छों को हटाने के लिए फावड़े का उपयोग कर सकते हैं ताकि ज्ञान (हल) पूरी तरह से काम करे और आपका दिल (खेत) अच्छी तरह से खेती करे।

यह सम्पूर्ण बौद्ध धर्म है

शाक्यमुनि ने कुशलतापूर्वक कुशल साधनों का उपयोग करके लोगों को, जो अपने खेतों में खेती करने वाले थे, आसानी से समझने योग्य शब्दों में यह सिखाया कि अपने मन में आस्था के बीज बोना और उनका पोषण करना तथा उसका फल प्राप्त करना, धरती की खेती करने जितना ही महत्वपूर्ण है। बौद्ध विद्वान फुमियो मसुतानी (1902-87) ने इन श्लोकों की प्रशंसा एक अद्भुत धर्म संवाद के रूप में की, उन्होंने कहा कि यहाँ, शाक्यमुनि हमें "बौद्ध धर्म की पूरी तस्वीर और सार को विस्तृत, ठोस तरीके से" दिखा रहे हैं। यदि आस्था के बीज हमारे मन की मिट्टी में गिरते हैं, तो हम भय और चिंता से मुक्त होकर शांति की स्थिति में पहुँच जाएँगे, और साथ ही "हर तरह के दुख से मुक्त हो जाएँगे।" इसके अलावा, ऐसे मन की शांति चाहने वाले सभी लोगों की इच्छाएँ, साथ ही इसे प्राप्त करने की विधि, गाथा की इन छोटी पंक्तियों में संक्षिप्त रूप में दी गई हैं, और हम कल्पना कर सकते हैं कि इस शिक्षा को प्राप्त करने वाले कई लोगों को जीने की आशा और आगे बढ़ने की शक्ति मिली होगी।

हालाँकि, अगर आप पूछें कि क्या एक बार अपने मन को विकसित करने की कोशिश करने से आप दुःख से मुक्त हो जाएँगे, तो मैं कहूँगा कि मुझे नहीं लगता कि ऐसा है। मेरा मानना है कि बार-बार अपने मन को विकसित करना और—बार-बार—अपने स्वयं के बुद्ध स्वभाव को उजागर करना महत्वपूर्ण है, जो सीधे मन की शांति की ओर ले जाता है। और इसी भावना से, अगले अंक में, हम और अधिक गहराई से विचार करेंगे कि हमारे बुद्ध स्वभाव को साकार करने का क्या मतलब है।

कोसेइ, सितम्बर 2024



काँमिक्स के माध्यम से रिश्शो कोसेइ काइ का परिचय

रिश्शो कोसेइ काइ के सदस्य बनना

बौद्ध धर्म के तीन प्रमुख वार्षिक कार्यक्रम

बौद्ध धर्म के तीन प्रमुख वार्षिक कार्यक्रम निम्नलिखित हैं, और रिश्शो कोसेइ काइ उनके लिए महान पवित्र हॉल और प्रत्येक धर्म केंद्र में समारोह आयोजित करता है:

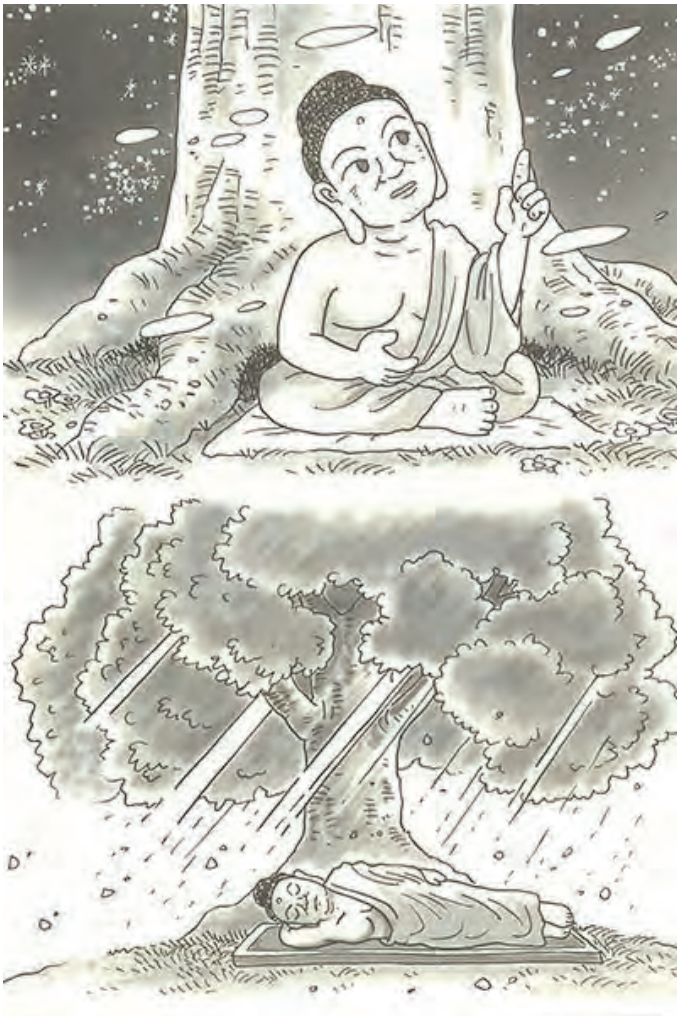
8 अप्रैल: शाक्यमुनि के जन्म की वर्षगाँठ

8 दिसंबर: शाक्यमुनि के बुद्धत्व प्राप्ति की वर्षगाँठ

15 फरवरी: शाक्यमुनि बुद्ध के निर्वाण में प्रवेश की वर्षगाँठ

ये वे दिन हैं जिन पर हम शाक्यमुनि बुद्ध का धन्यवाद करते हैं, जिन्होंने हमें सत्य की शिक्षा दी। हम इन दिनों शिक्षा का अभ्यास करने और कुछ अच्छा करने की भी शपथ लेते हैं जिससे कई लोग प्रभावित होंगे।

शाक्यमुनि की जन्म वर्षगाँठ (8 अप्रैल)



शाक्यमुनि की बुद्धत्व प्राप्ति की वर्षगाँठ (8 दिसंबर)



शाक्यमुनि बुद्ध के निर्वाण में प्रवेश की वर्षगाँठ (15 फरवरी)



क्या आप जानते हैं?

शाक्यमुनि के जन्म की वर्षगाँठ के अवसर पर, हम फूलों से सजे एक छोटे से शिवालय में शिशु बुद्ध की मूर्ति पर मीठी चाय (हाइड्रेंजिया की किण्वित पत्तियों से बनी एक हर्बल चाय) डालते हैं। यह रिवाज उस परंपरा से निकला है जिसके अनुसार शाक्यमुनि के जन्म के समय, एक ड्रैगन स्वर्ग से उतरा और शिशु शाक्यमुनि पर सुगंधित पानी डाला।



नव वर्ष के दिन पूजा के लिए जाएँ



1 जनवरी वह दिन है जब हम आनन्द मनाते हैं, नव वर्ष का स्वागत करते हैं, तथा आने वाले वर्ष में सुख और शांति के लिए प्रार्थना करते हैं।

रिश्शो कोसेइ काइ में, नव वर्ष के दिन सुबह-सुबह एक समारोह आयोजित किया जाता है। सदस्य नव वर्ष का जश्न मनाने के लिए ग्रेट सेक्रेड हॉल या अपने धर्म केंद्र में जाते हैं।

नव वर्ष की शुरुआत का जश्न मनाने के अलावा, हम गोहोनज़ोन या "भक्ति के केंद्र" के सामने अपने लिए निर्धारित लक्ष्य की ओर काम करने की शपथ लेते हैं। इस शपथ को केत्सुजो कहा जाता है, जिसका बौद्ध शब्दों में शाब्दिक अर्थ है "आध्यात्मिक संकल्प"।

जब हम अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए कड़ी मेहनत करने का संकल्प लेते हैं और विश्व शांति के लिए प्रार्थना करते हैं, तो हम तरोताजा और शांतिपूर्ण महसूस करते हैं।

क्या आप जानते हैं?

केत्सुजो का अर्थ किसी बात पर पूरी तरह से विश्वास करना भी है, बिना किसी संदेह या झिझक के रिश्शो कोसेइ काइ के सदस्य अक्सर इस शब्द का प्रयोग करते हैं। आइए हम पूरे वर्ष भर वही करते रहें जो हमने नव वर्ष की पूजा के लिए यात्रा के दौरान प्रतिज्ञा की थी।



बुद्ध के साथ हमारा गहरा संबंध

बुद्ध के साथ अपने संबंध के प्रति जागरूक होने के बाद

निक्क्यो निवानो
रिश्शो कोसेइ काइ का संस्थापक



एक बार जब आप बुद्ध के साथ मेरे द्वारा वर्णित इस अनमोल संबंध की गहराई से सराहना करेंगे, तो आपकी जीवनशैली स्वाभाविक रूप से बदल जाएगी।

मैं बर्फीले नीगाटा प्रान्त के एक पहाड़ी गाँव में पला-बढ़ा हूँ, और जब मैं बच्चा था, तो मैं बर्फ से ढका हुआ घर लौटता था। मेरे दादाजी मुझे अपनी गद्देदार किमोनो जैकेट के अंदर डालकर गले लगाते थे, मेरे बर्फीले शरीर को गर्माहट देते थे। ऐसे समय में, वे हमेशा मुझसे कहते थे, जैसे कि यह बोलने का कोई तरीका हो:

"अगर परिवार के सदस्य सिर्फ जीविका कमाने और खाने के लिए काम कर रहे हैं, तो वे लॉन्गहॉर्न बीटल ग्रब से अलग नहीं हैं। लॉन्गहॉर्न बीटल ग्रब सिर्फ जीवित रहने के लिए खाते हैं। चूँकि हम इंसान के रूप में पैदा हुए हैं, इसलिए परिवार में कम से कम एक व्यक्ति ऐसा होना चाहिए जो समाज की सेवा करे।"

शायद इसलिए कि यह मुहावरा मेरे युवा मन में गहराई से समाया हुआ था, मैं जब भी किसी को परेशानी में देखता तो चुपचाप खड़ा नहीं रह पाता था और हमेशा सोचता था, "मैं मदद के लिए कुछ करना चाहता हूँ।" आध्यात्मिक शिक्षाओं की तलाश में जो सभी को खुशी दे सकती थीं, मैं लोटस सूत्र से मिला और अंततः रिश्थो कोसेइ काइ की स्थापना की।

आजकल लोगों को स्वार्थी कहा जाता है, जो सिर्फ अपने हितों के बारे में सोचते हैं। ऐसा शायद इसलिए है क्योंकि उन्होंने कभी दूसरों के लिए काम करने की खुशी का आनंद नहीं लिया है। मुसीबत में फंसे किसी व्यक्ति की मदद करने या संकट में फंसे किसी व्यक्ति को सलाह देने और उसका आभार प्राप्त करने की खुशी वास्तव में एक संतुष्टिदायक अनुभव है। इस वजह से, हम कह सकते हैं कि दूसरों को खुशी देने वाले कार्य करना, खुद की खुशी पाने का सबसे तेज़ तरीका है।

और एक और बात ध्यान में रखने योग्य है कि हमारी तरह, हमारे संपर्क में आने वाले सभी लोगों का भी पिछले जन्मों में बुद्ध के साथ कर्म संबंध होता है।

ऐसा कहा जाता है कि हमारे सामाजिक जीवन में, अच्छे रिश्ते बनाने के लिए दूसरों की मानवता का सम्मान करना महत्वपूर्ण है, फिर भी यह आश्चर्यजनक रूप से कठिन हो सकता है। लेकिन अगर आप दूसरों को यह सोचकर देखते हैं कि "इस व्यक्ति ने पिछले जन्मों में कई बुद्धों को श्रद्धांजलि दी है और महान प्रतिज्ञाएँ की हैं," तो आप स्वाभाविक रूप से उनका सम्मान करने में सक्षम होंगे।

बेशक, आपके सामने आने वाले लोगों में ऐसे लोग भी हो सकते हैं जो अपने पिछले जन्मों में की गई महान प्रतिज्ञाओं को भूल गए हैं और बुद्ध मार्ग से दूर हैं। हालाँकि, ऐसे व्यक्तियों के लिए, हमें उन्हें बुद्ध के साथ उनके कर्म संबंध की याद दिलाने के लिए काम करना चाहिए। इसलिए मैं अपने सदस्यों से आग्रह करता हूँ कि वे "प्रत्येक व्यक्ति दूसरे का मार्गदर्शन करे" का अभ्यास करें।

यदि मानवीय रिश्तों की विशेषता यह समझ हो कि "मैं एक बुद्ध हूँ और आप भी हैं" तो यह दुनिया भर में फैल जाए, तो यह शांति का क्षेत्र बन जाएगा, जिसे बौद्ध धर्म "अनन्त शांत प्रकाश की भूमि" कहता है।

मुझे पूरी उम्मीद है कि आप सभी इसे गंभीरता से लेंगे, शिक्षाओं को व्यवहार में लाने का प्रयास करेंगे, और बुद्ध के साथ अपने संबंध को गहरा करेंगे।

Bodai no me o okosashimu (Kosei Publishing, 2018), p.58-60

शाक्यमुनि के समय की यात्रा

Rev. Keiichi Akagawa
Director, Rissho Kosei-kai International

जापान में रिकॉर्ड तोड़ गर्मी और मूसलाधार बारिश से भरी गर्मी आखिरकार खत्म हो गई है। हालाँकि गर्मी अभी भी बनी हुई है, लेकिन कैलेंडर के अनुसार अब हम शरद ऋतु में प्रवेश कर रहे हैं। आपके देश या क्षेत्र में यह कैसा है?

इस महीने के संदेश में, प्रेसिडेण्ट निवानो ने शाक्यमुनि बुद्ध के सुत्त निपात के एक गाथा से एक किस्सा पेश करते हुए हमें बताया है कि "मेरा मानना है कि बार-बार अपने मन को विकसित करना और बार-बार अपने बुद्ध स्वभाव को उजागर करना महत्वपूर्ण है, जो सीधे मन की शांति की ओर ले जाता है।" शाक्यमुनि के जीवनकाल के दौरान भारत में खेती की पद्धति की पृष्ठभूमि है जो ब्राह्मण, एक महान भूमिधारक को मन को विकसित करने के महत्व को समझाते हैं।

9 से 22 अप्रैल, 2010 तक, रिश्शो कोसेइ काइ की बौद्ध पवित्र स्थलों की चौंतीसवीं तीर्थयात्रा में भाग लेने वाले के रूप में, मैंने बुद्ध से जुड़े क्षेत्रों की यात्रा की, मुख्य रूप से बिहार, पूर्वोत्तर भारत में। तीर्थयात्रा बस की खिड़कियों से बाहर ग्रामीण दृश्य ऐसे लग रहे थे जैसे हम दो हजार छः सौ वर्ष पहले के भारत में वापस आ गए हों, शायद इसलिए क्योंकि महत्वपूर्ण बौद्ध स्थलों को संरक्षित करने के लिए क्षेत्रों को आधुनिक विकास से बचा लिया गया है। यह एक प्रेरक यात्रा थी जिसने मुझे बुद्ध की याद दिला दी जो धर्म का प्रचार करने के लिए नंगे पैर यात्रा करते थे। खेत के विशाल विस्तार को देखते हुए, सुत्त निपात में बुद्ध के कुशल धर्म संवाद ने मेरे दिमाग में वास्तविकता की एक नई भावना के साथ प्रवेश किया।

प्रेसिडेण्ट के धर्म प्रवचन को पढ़ते हुए, मैंने भारत की अपनी यात्रा पर वापस दृष्टि डाली और हमारे बौद्ध हृदयों को विकसित करने के अर्थ की पुष्टि की। इस महीने, मैं अपने दिन अपने मन को विकसित करने और अपने बुद्ध स्वभाव को उजागर करने की याद में बिताना चाहूँगा।



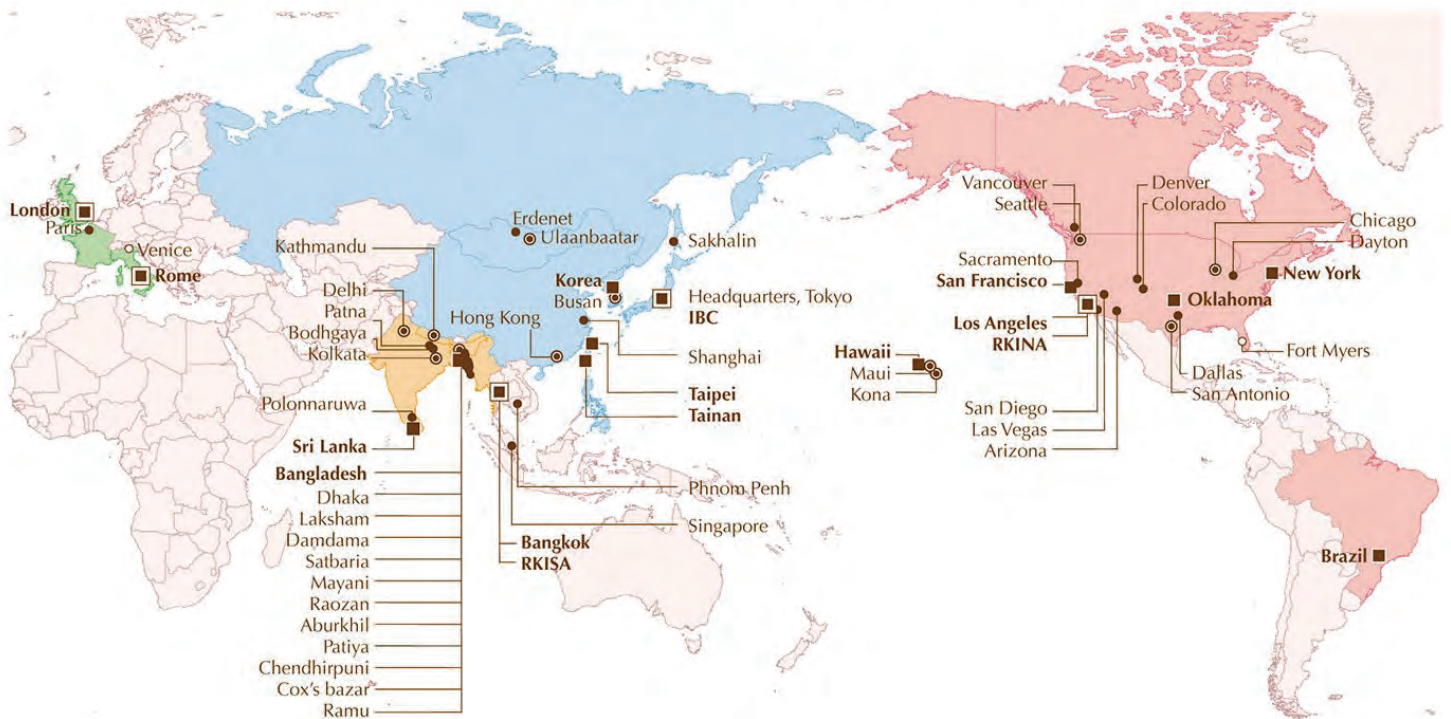
14 जुलाई, 2024 को कोरिया के रिश्शो कोसेइ काइ में धर्म शिक्षक प्रशिक्षण में प्रतिभागियों के साथ रेवरेंड अकागावा (पहली पंक्ति, बीच में)।

Rissho Kosei-kai International

Make Every Encounter Matter



🌸 A Global Buddhist Movement 🌸



Information about local Dharma centers



facebook



X



✉ We welcome comments on our newsletter Living the Lotus: living.the.lotus.rk-international@kosei-kai.or.jp